भारत में विदेशी विश्वविद्यालय

'उत्तर भारत में हिमालय का अनश्वर बर्फ,
मध्य भारत में हरे-भरे जंगल - पटार,
दक्षिण में समुद्र की सुंदर लहरें.....
तथा पश्चिम में गर्म रेगिस्तान ....
इन सबसे समृद्ध है हमारा भारत'

ब्रिटिश अनुशासक 'लॉर्ड मकौले' भारत मे पहले अंग्रेज़ी शिक्षा शुरू किया था। उनके अनुसार अंग्रेजी शिक्षा का लक्ष्य एक ऐसा भारतीय जनता का निर्माण करना जो रंग - रूप आदि में भारतीय है पर बुद्धिमत्ता पर अंग्रेज़ी। उस समय के प्रमुख नेताओं जैसे महात्मा गांधी को इसके नकारात्मक छवि के बारे मे ज्ञान था इसलिए वह 1905-06 में स्वदेशी प्रस्थान आगाज़ किया जो भारत को विदेश राज्यों से ज़्यादा मूल्य दिया। भारतीय वेषभूषा तथा भारतीय ज्ञान को ज़्यादा महत्व दिया।

कई साल पहले लोग अपने-अपने खोल में बंद थे पर अब टकनीकी प्रगति के कारण सब लोग दुनिया की किसी भी कोने से भी हमें देख सकते हैं, बात कर सकते हैं। आज की युवा भारत में न रहकर किसी विदेशी राज्य से अपने शिक्षा प्राप्त करना चाहता है। काम भी करने के लिए वे भारत को छोडकर किसी विदेशी स्थान या देश को पसंद करते हैं।

एक देश का सबसे बडा ताकत उसके सैन्यों में तथा संसाधनों में नहीं बल्कि वह एक राष्ट्र की युवा में होता है। श्री ए. पी. जे अबदुल कलाम जी के अनुसार - 'युवा के ताकत संसार के नीचे, ऊपर और अंदर का सबसे बडे ताकत हैं'। विदेशी विद्यालयों के आगमन के कारण भारत के युव तारें किसी अन्य देश की प्रगति में भाग ले रहा है जो भारत को प्रगति में नीचे खींच सकता है। विदेशी राज्य कम दाम में भारतीय को रोजगार देते हैं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय होने पर बहुत कम लोग भारत से बाहर जाते हैं क्योंकि सब सुविधाएँ यहीं मिले तो क्यों जाना विदेश! यह ही नहीं विदेश से आनेवाले भी भारत में नया कंपनी शुरू करेंगे और भारत का आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को पुनः निर्माण करने में मदद कर सकता है।

इस आगोलीकरण के दुनिया में लोग अपने चार दीवारों में बंद रहना नहीं चाहते वे सारा अवसर खुलकर अपना रंग-बिरंगे चमकदार पंखों से ~~उड़कर~~ उड़कर अपने सफलता प्राप्त करना चाहता है। दुनिया एक गाँव के रूप एक छाता के नीचे आ रहा है - अब 'वसुदेव कुटुबकं' को महत्व दिया गया है।

भारत में बहुभाषा बोली जाती है, बहुधार्मिक, बहुसंस्कारिक भारत जैसे देश में विदेशी विश्वविद्यालय बहुत ही लाभदायक होंगे क्योंकि भारत की संस्कृति सब संस्कृतियों को स्वागत

करते हैं तथा सब संस्कृतियों का सम्मान करता है। भारत की विविधता में एकता को दर्शाने के लिए भी यह उपयोगी होगा। ~~प्रमुम~~ प्रमुख समाज वैज्ञानिक श्री एम एन श्रीनिवास के अनुसार भारतीय लोग अंग्रजी लोगों के वेषभूषा, खान-पान, संस्कृति आदि को अपनाया - 'पश्चिमीकरण' विदेशी विद्यालय और विश्वविद्यालय आने पर भी भारतीयों उनकी तरह अपने आप को बदलने शुरू करेंगे। जिस तरह एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी प्रकार हर चीज को गुण और दोष है।

" चाकू जीवन बच भी सकते है
जीवन ले भी सकते है।
सब्जी काटने वाले चाकू से
कर सकता है वध "

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय का गुण-दोष

भारत शिक्षा का क्षेत्र में और ऊँचाई में पहुँच जाएगा और शिक्षा का तरीका

भी बदल जाएगा। भारतीय विद्यालय की शिक्षा बिल्कुल कुछ किताबों के ज्ञान मे सीमित है पर ~~बिशे~~ विदेशी विद्या अनुभवों से ज्ञान को ज्यादा महत्व देता है। भारत शिक्षा का पाठ्यक्रम मे बडी बदलाव ला सकते हैं।

नई-नई प्रगति और सुविधाएँ से पढाई आसान बनाते हैं। भारत की आर्थिक स्तर में बडी बडी ऊँचाई प्राप्त करने में मदद कर सकता हैं। रोबोटिक्स आदि नए नए प्रगति से जी डी पी बढ सकते हैं और विदेशी अध्यापकों के उपलब्धि भारतीय छात्रों के लिए भी बहुत आवश्यक है अपने संवाद को अच्छे करने के लिए।

भारतीय छात्रों को अपने शक पूछने के लिए नए अवसर मिलेंगे और माहिर व्यक्तियों (प्रसिद्ध व्यक्तियों) के शिक्षण मे अपना सारा प्रतिभा दिखा सकता है।

इन सब गुण होने पर भी लोग इसे एक नए तरीके के उपनिवेष के रूप मे विशेषण करते है। भारत का अधिकार भारत का भविष्य सब युवा का हाथो मे

'युवा है देश का भविष्य,
अच्छे नौजवान अच्छे वतन'

इसलिए भारतीय मूल्यों को भूलकर वैदेशिक मूल्यों को स्वीकारने से भारत की परंपरा, संस्कृति आदि में परेशान होने की संभावना है। विश्वविद्यालय भी युवा का ~~निर्मण~~ निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं तो उनकी चिंता को बदलने की ताकत भी यह विदेशी विश्वविद्यालयो में है। भारत की संस्कारों को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय विश्वविद्यालय ही विदेशी विश्वविद्यालयों से बेहतरीन है क्योंकि हमारे अधिकार, हमारे जीवन, हमारे देश की सुरक्षा से खतरे में नहीं होनी चाहिए। विदेशी विश्वविद्यालय उनको ही बेहतर कहते

और दूसरों को बुरा कहते हैं ।
संक्षेप में भारत कुछ दशकों से अपनी प्रगति की सीढी चढ रहा है । दो सौ सालों के ब्रिटीश अनुशासन के बाद एक बच्ची की तरह वह बडे हो रही है । इसी वैदेशिक शक्ति भारत को प्रगति से पीछे खीचा है, फिर भी यह गलती मत करना है । विदेशी विश्वविद्यालय हमें नहीं स्वीकारना है 'पूरी तरह' - यह बिलकुल नई अवसर खुलाने में मदद करते हैं नई वातावरण, नई संस्कृति से मिलन सब में मदद करती है पर भारत माता को पूरी तरह भूलना नहीं चाहिए ।
भारत की पुराने आदर्शों को मन में रखकर वैदेशिक शक्ति को नहीं समर्पण करना है भारत को । भारत को अपनी पहचान है । उस पहचान को मत मिटाना । लोकतंत्र राज्य होने के कारण सभी को पूरा स्वतंत्रता दिया है । छात्रा के अनुसार वह

किसी भी विश्वविद्यालय का भाग बन सकता है। युवा का चरित्र निर्माण ठीक होना चाहिए एक शांत और सुंदर भविष्य के लिए। गांधी जी जैसे नेताओं के सोच में भारत विद्यालय और विश्वविद्यालय अंग्रेजों को हटाने का हथियार था वह नए रूप से नए भाव से वैदेशिक शक्ति भारत भी आ गया है। भारत से भी कई सीख मिल सकता है विदेशों को

भारत की अभिलाषा

स्वतंत्रता है परिभाषा'

इसकी आने से साधारण विश्वविद्यालय की छात्रों मूल्यहीन और बेरोजगार होने की संभावना भी है।